देवी देवताओं के दैनिक षोढशोपचार पूजन विधि

षोडशोपचार पूजा विधि : वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक पूजा अनुष्ठानों में षोडशोपचार पूजा का बहोत महत्व है। अनुष्ठानो में पंडित पुरोहितो द्वारा देवी देवताओ के षोडशोपचार पूजन मंत्र के द्वारा षोडशोपचार पूजा (shodashopchar puja) की जाती है। जिसका यहा यहाँ वर्णन किया जा रहा है। षोडशोपचार पूजन में वैदिक एवं पौराणिक मंत्रो का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा देवी देवताओं के स्तुति मंत्रो द्वारा भी उन देवी देवताओं की षोडशोपचार और पंचोपचार पूजा की जा सकती है जैसे पुरुष सूक्त के षोडश मंत्र और रूद्र सूक्त के नमस्ते रूद्र आदि षोडश मंत्रो से भी षोडशोपचार पूजन किया का सकता है अथवा देवी देवताओ की उनके स्तुति मंत्रो द्वारा भी षोडशोपचार पूजा की जा सकती है।

सर्वप्रथम घर के मंदिर को एवं देवी देवता के पूजन स्थान को स्वक्छ, साफ, सुथरा और पवित्र करे। उसके उपरांत अपनी पूजा आरम्भ करे

षोडशोपचार पूजन मंत्र

आत्म शुद्धि मन्त्र : बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से निम्न मंत्रो के उच्चारण के साथ अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर जल छिड़कना चाहिये-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आचमन मंत्र : निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीन बार आचमन करें ।

ॐ केशवाय नम:
ॐ नारायणाय नम:
ॐ माधवाय नम:

फिर यह मंत्र बोलते हुए हाथ धो लें : ॐ हृषीकेशाय नम:

माथे में तिलक लगाने का मंत्र : ॐ चंदनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम ।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मी: तिष्ठति सर्वदा ॥

निम्न मंत्रो के उच्चारण के साथ माथे में तिलक लगाये ।

संकल्प मंत्र : अब अपने से दाहिने दीपक जलायें एवं हाथमें अक्षत-पुष्प आदि लेकर पूजनका सङ्कल्प करे –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य (अपना नाम एवं गोत्र बोलें) अहं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च (देवी-देवता का नाम) देवस्य [देव्याः] पूजनं करिष्ये।

भगवान का ध्यान मंत्र : देवी देवता का ध्यान उनके ध्यान मंत्रों के उच्चारण द्वारा करने के उपरान्त निम्न मंत्र से ध्यान को समर्पित करें।

"ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।"

अमुक के स्थान पर ध्यान मंत्र द्वारा पूजे जाने वाले देवी देवता के नाम का उच्चारण करें।

इसके उपरान्त षोडशोपचार मंत्रों के उच्चारण से देवी देवता का पूजन करें, षोडशोपचार पूजन वैदिक मन्त्र, पौराणिक मंत्र अथवा पुरुष सूक्त, रूद्र सूक्त, देवी देवताओ के स्तुति मंत्रो से की जाती है।

षोडशोपचार के कुछ मंत्रों का उल्लेख यहा नही किया गया है। षोडशोपचार के अलावा दशोपचार और पंचोपचार से भी देवपूजन किया जा सकता है।

1. आवाहनम् : "ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम । आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

2. आसनम् : "ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनञ्च मया दत्त गृहाण परमेश्वर । आसनं समर्पयामि ॥"

आसान के लिए पुष्प समर्पित करें।

3. पाद्यम् : "ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् । पाद्यं समर्पयामि ॥"

इसके उपरांत आचमनी से चरणों को धोने के लिए जलं समर्पित करें।

4. अर्घ्यम् : "ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
करुणां कुरु मे देव गृहाणायं नमोऽस्तुते ॥"

गन्ध पुष्प अक्षत युतं जलं तीन बार समर्पित करें।

5. आचमनीयम् : "ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर । आचमनीयं समर्पयामि ॥

आचमनी से आचमन के लिये जल समर्पित करें।

6. स्नानम् : "ॐ गंगा सरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव हयतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥"

आचमनी से स्नान के लिये जल समर्पित करें।

(पयः स्नानम्, दधि स्नानम्, घृत स्नानम्, मधु स्नानम्, शर्करा स्नानम्, पञ्चामृत स्नानम्, शुद्धोदक स्नानम् – आदि स्नान मंत्रो का उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है। अनुष्ठानो में इन मंत्रो का प्रयोग होता है।)

7. यज्ञोपवीतम् : "ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥"

दो बार आचमन करें। (मानसिक रूप से समर्पित करे)

8. वस्त्रम् : "ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् । वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥"

आचमन करें। (मानसिक रूप से समर्पित करे – आप दैनिक पूजन में रक्षासूत्र (मौली धागा) तोड़कर भी समर्पित कर सकते है। इसके अलावा भी बहोत से तरीको का उपयोग किया जा सकता है। पूजन सामग्री की दुकानों में देवी देवताओ के कपडे मिलते है जिनका आप इस मन्त्र के साथ उपयोग कर सकते है।)

9. गन्ध : "ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दन प्रतिगृह्यमयताम् । चन्दन समर्पयामि।"

चन्दन समर्पित करें।

10. अक्षताः : "ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ । कुङकुमाक्ता सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर । अक्षतान् समर्पयामि"

अक्षत समर्पित करें।

11. पुष्पाणि : "ॐ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् । पुष्पाणि समर्पयामि ॥"

पुष्प समर्पित करें।

12. धूपम् : "ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । धूपमाघ्रापयामि ॥"

धूप जलाकर समर्पित करें।

13. दीपम् : "ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥"

दीपक जलाकर समर्पित करें।

14. नैवेध्यम् : "ॐ शर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः ।
आहारै र्भक्ष्यभोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यं निवेदयामि ॥"

नैवेद्यं समर्पित करें।

"ॐ प्राणाय स्वाहा ।
ॐ आपानाय स्वाहा ।
ॐ व्यानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा ।
ॐ समानाय स्वाहा ।

प्रत्येक स्वाहा के बाद आचमनी जल समर्पित करें।

(ताम्बूल, फल – आदि मंत्रो का उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है। अनुष्ठानो में इन मंत्रो का प्रयोग होता है।)

15. दक्षिणा : "ॐ न्यूनारिक्त पूजायां सम्पूर्ण फल प्राप्तये ।
दक्षिणां कांचनीं देव! स्थापयामि तवाग्रतः दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ॥"

दक्षिणा समर्पित करें।

16. आरती मंत्र : "ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्त्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदोत्तम ॥"

अक्षत, रोली, कुमकुम, पुष्प आदि से सजी हुई आरती की थाली में दीपक और कपूर जलाकर घंटा, घंटी और शंख ध्वनि के साथ देवी देवता की आरती करे।

17. पुष्पांजलि मंत्र : "ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साया सन्ति देवाः ॥"
"ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पांजलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर ॥"

पुष्पांजलि समर्पित करें।

18. प्रदक्षिणा मंत्र : "ॐ यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणायाः पदे पदे ॥"

प्रदक्षिणां करें।

क्षमा प्रार्थना मंत्र : पूजन, जप, हवन आदि में जो गलतियाँ हो गयी हों, उनके लिए हाथ जोड़कर सभी लोग क्षमा प्रार्थना करें।

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं माया देवं परिपूर्ण तदस्तु में ॥

अब आसन के नीचे सामने जल गिरा कर जल बिंदु को प्रणाम कर आसन छोड़ेंए सस्टांग प्रणाम करें

प्रस्तुत कर्ताः
अमृत कलश, https://ak.igindiabiz.com :: 9836282767, 9748229422, 9123611805

Disclaimer : विभिन्न शास्त्रोक्त एवं यायावर ज्ञानियों से संकलित जानकारी यहां दी गई है, जिसकी सहमति अमृत कलश एवं संलग्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों की नहीं है। सिर्फ जानकारी के लिये उपलब्ध करवाया गया है। किसी भी विधि का परिणाम कर्ता के अपने भक्ति, श्रद्धा, समर्पण एवं विश्वास पे निर्भर है। किसी भी विधि का पालन अपनी समझदारी और विवेक पर करें। किसी भी अच्छे बुरे परिणाम के लिये अमृत कलश, संलग्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी तरह का कोई कानूनी प्रक्रिया मान्य नहीं है।